20. धरा और पर्यावरण

• कुप. सी. सुदर्शन

लेखक परिचय

बहुभाषाविद् विलक्षण प्रतिभा के धनी, मौलिक चिन्तक, ओजस्वी व प्रभावी वक्ता, पत्रकार श्री सुदर्शन जी अहिन्दी भाषी होते हुए भी हिन्दी निबन्ध विधा के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। जबलपुर विश्वविद्यालय से विज्ञान और प्रोद्यौगिकी में उपाधि प्राप्त करने के उपरांत आपने अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्रार्पित कर दिया और देश की अनेक संस्थाओं से जुड़े होकर समाज सेवा में लग गए। जटिल और कठिन विषय को भी अपने गहन चिन्तन से सरल–सुबोध भाषा शैली में रखना आपका वैशिष्ट्य है। संसार की मौलिक समस्याओं पर इनकी पकड़ और भारतीय दृष्टि बेजोड़ है।

पाठ परिचय

पर्यावरण–संरक्षण से प्रभावित हम पर्यावरण प्रदूषण पर मात्र एकांगी विचार ही कर पा रहे हैं। यह सच है कि पर्यावरण–प्रदूषण आज की विकट व ज्वलंत समस्या है किन्तु इसके निदान और उपचार के मूल में उतरने की आवश्यकता है। दुर्भाग्य से हम अन्य क्षेत्रों के समान ही इस क्षेत्र में भी मात्र वही सीख रहे हैं जो योजनापूर्वक हमें सिखाया जा रहा है। इस समस्या की अपनी कोई भारतीय दृष्टि भी हो सकती है, हमारे हिसाब से भी इसके कारण और उपचार हो सकते हैं, स्वतंत्र भारत के स्वाभिमानी नागरिक को यह सीखने–समझने की आवश्यकता है। प्रसिद्ध विचारक व लेखक सुदर्शन जी ने इस समस्या का दूरगामी समाधान सुझाते हुए शाश्वत भारतीय दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है जो केवल भारत के लिए ही नहीं अपितु सम्पूर्ण संसार की इस समस्या का समाधान करने में समर्थ है। विद्वान लेखक की भाषा अत्यंत सरल, प्रवाहयुक्त व शैली प्रभावपूर्ण है।

मूल पाठ

'माता भूमि पुत्रोऽम् पृथीव्या' केवल पृथ्वी के संबंध में ही नहीं अपितु भारतीय मन प्रकृति को और नदियों को भी मातृ स्वरूप में ही दर्शन करता है। गंगा को हम माता कहते हैं, तुलसी को हमने माता माना, अश्वत्थ वृक्ष की हमने पूजा की और इन सबके माध्यम से समाज के मन में प्रकृति के प्रति एक पूज्य भाव उत्पन्न किया। हम तो लोगों को दूध पिलाते हैं, कबूतरों, चिड़ियों को दाना चुगाते हैं, हम तो चींटियों तक को आटा डालते हैं क्योंकि इन सबके अस्तित्व का कोई प्रयोजन है। इस विश्व के प्रत्येक पेड़–पौधे, जीव–जन्तु का अपना एक प्रयोजन है। इस प्रयोजन को जान कर सारे विश्व की रचना में उसका क्या स्थान है इसको पहचान कर उसको बनाए रखें तभी समन्वय ठीक से बैठेगा। इसी को हमारे यहाँ धर्म कहा है। उसको पहचान कर उसके नियमों को जानकर तद्नुसार यदि हम अपनी सारी रचना और अपना विकास पथ आयोजित करेंगे तो प्रकृति के साथ हमारा सुसंगत विकास हो सकेगा। हमारी प्राचीन काल से ही यह अवधारणा रही है कि प्रकृति के साथ मिलकर चलो और इसीलिए प्रकृति के प्रति पूज्य भाव हमने उत्पन्न किया। प्रकृति को हमने माता कहा। धरती धारण करती है इसीलिए उसे माता कहा।

सारा पोषण हमें इसी धरा और प्रकृति से प्राप्त होता है और धरा पर जितनी भी वनस्पतियाँ और पशु–पक्षी आदि हैं, वे सब हमको सब प्रकार से पोषण प्रदान करते हैं और इसीलिए जब हम अपनी रक्षा की बात करते हैं तो इन सब की भी रक्षा होनी चाहिए। वास्तव में जिस धरा और प्रकृति के सहारे संपूर्ण मानव जाति का अस्तित्व निर्भर है, वही आज संकटग्रस्त हो गई है।

यह संकट आया कहाँ से ? कम से कम यह भारत की देन नहीं है। संसार के कुल प्रदूषण का 14 प्रतिशत पाप ढोने वाला अमेरिका आज हमें पर्यावरण की शिक्षा दे रहा है, प्रकृति के अन्दर जितनी भी सम्पदा है उसका अमर्यादित शोषण हो रहा है। अमेरिका में दुनिया की कुल 5 प्रतिशत जनसंख्या है, लेकिन दुनिया के 40 प्रतिशत संसाधनों का उपयोग केवल अमेरिका करता है। सात बड़े समृद्ध देश, जो 'जी–सेवन' कहलाते हैं, इनमें दुनिया की 11 प्रतिशत जनसंख्या है, लेकिन दुनिया के 70 प्रतिशत संसाधनों का उपयोग वे सब कर रहे हैं। ये लोग विकासशील देशों पर आरोप लगाते हैं कि प्रदूषण इनके कारण हो रहा है। वास्तव में यह बात गलत है। चूँकि विकासशील देशों के पास आज भी संसाधन हैं और उनके चुक रहे हैं, इसलिए उन संसाधनों को हस्तगत करने के लिए 'गैट व विश्व व्यापार संगठन' आदि व्यवस्था लाई गई है। क्योंकि उनको लगता है कि अपनी विकसित स्थिति को यदि बनाए रखना है तो जितना कच्चा माल, आज तक हमको उपलब्ध होता रहा है, उतना आगे भी मिलते रहना चाहिए। अमेरिका को यदि अपनी स्थिति को बनाए रखना है तो 40 प्रतिशत कच्चा माल बाहर से उसको मिलना चाहिए।

पश्चिम की उपभोगवादी दृष्टि में से प्रकृति के इस अमर्यादित उपभोग का विचार–विकास हुआ है। धरा या प्रकृति उनके लिए पूज्य नहीं अपितु उपभोग की वस्तु है, उनका अस्तित्व ही मनुष्य को सुख देने के लिए है, उनमें कोई जीवन नहीं अतः उनका जितना अधिकतम शोषण किया जा सकता है, करो। अपने महान वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बसु की खोज से पूर्व तक वे सब पेड़–पौधों को जड़ मानते थे। बसु की खोज को भी उन्होंने आसानी से स्वीकार नहीं किया था। महामना बसु तो जिन्हें आज जड़ माना जाता है उस धातु, पत्थर आदि को भी सजीव मानते थे। इस पर प्रयोग भी कर रहे थे किन्तु उन्हें अवसर नहीं मिल पाया। हमने तो प्रत्येक पदार्थ में प्रारंभ से आत्मतत्व का अस्तित्व स्वीकार किया है। 'सर्वं खल्वमिदम् ब्रह्म' यह सब कुछ निश्चित ही ब्रह्म है।

पश्चिम की अवधारणा में से ही खनिज दोहन, तेल दोहन, जंगलों की कटाई, दैत्याकार उद्योगों व मशीनों का निर्माण, रासायनिक खादें और खेती उसी अवधारणा की उपज है। रासायनिक खादों के अत्यधिक उपयोग के कारण अमेरिका में हजारों हेक्टेयर भूमि बंजर हो चुकी है। यही क्रम चलता रहा तो अमेरिका अगले 50 वर्षों में मरुस्थल हो जाएगा। हम भी बड़े उत्साह से उसी ओर बढ़ रहे हैं। रासायनिक खाद के कारण वस्तु मात्रा में अधिक व बड़ी अवश्य हो जाती है परन्तु उसकी पोषण क्षमता कम हो जाती है। इन रासायनिक द्रव्यों के कारण हमारे शरीर में अनेक प्रकार के नवीन रोग कैन्सर आदि उत्पन्न हो रहे हैं।

अभी जापान से आए कुछ वैज्ञानिक दीनदयाल शोध संस्थान की ओर से गोंडा में जो विभिन्न प्रयोग चल रहे हैं, उन्हें देखने गए। वहाँ पर उन्होंने भारतीय खेती का अध्ययन किया और कहा कि हजारों वर्षों से भारत में खेती हो रही है, फिर भी यहाँ की उर्वरा शक्ति कम क्यों नहीं हुई ? उनके ध्यान में आया कि यहाँ के हल करीब 6 इंच ही धरती खोदते हैं जिसमें केंचुए जो भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाते हैं वे और अन्दर चले जाते हैं। परिणाम स्वरूप जमीन और पोली होकर उर्वरा हो जाती है जबकि पश्चिमी देशों की मशीनें चार फुट धरती खोद डालती हैं और सभी केंचुए मर जाते हैं। धरती की उर्वरा शक्ति निरन्तर कम होती जाती है। उर्वरा शक्ति कम होने से रासायनिक खाद अधिक देनी पड़ती है और इसके परिणामस्वरूप उर्वरा शक्ति कम होने का दुष्चक्र और आगे बढ़ता रहता है। उन वैज्ञानिकों ने पाया कि भारतीय खाद पद्धति लम्बे समय तक स्थायी लाभ पहुँचाने वाली, कम लागत की टिकाऊ पद्धति है।

जंगल कटते जा रहे हैं। अमेरिका और पश्चिम के देश तो अपने जंगलों को खा गए हैं। अब उनकी दृष्टि एशिया–अफ्रिका पर है। राष्ट्र के सन्तुलित विकास के लिए 33 प्रतिशत जंगल आवश्यक हैं। स्वतंत्रता के समय हमारे देश में 22 प्रतिशत जंगल थे। आकड़ों के अनुसार अब ये 11 प्रतिशत शेष रह गए हैं और कुछ लोगों का मानना है कि केवल 6 प्रतिशत ही बचे हैं। हम यदि वन देवता को ही समाप्त कर देंगे तो कौन देव हमारी रक्षा करेगा। क्या हमें वनों के दोहन का अमर्यादित उपयोग तुरंत नहीं रोकना चाहिए ? प्रकृति की एक धारण क्षमता होती है और उसका यदि अतिक्रमण हुआ तो प्रकृति इसका बदला लेती है। यह प्रकृति की व्यवस्था है। विज्ञान भी अब इस भारतीय अवधारणा को सिद्ध कर रहा है। इसलिए प्रकृति के साथ खिलवाड़ करेंगे तो हमें उसके परिणाम भोगने पड़ेंगे। प्राणवायु कम होती जाएगी, धरती का वायुमण्डल गर्म होता जाएगा, पेड़–पौधे नष्ट होने का मात्र इतना ही परिणाम नहीं होगा। प्रकृति अपने आप को सन्तुलित करने के लिए अनेक विभिषिकाएँ उत्पन्न कर सकती हैं, फिर वह भूकंप हो, बाढ़ हो या भविष्य में इससे भी भीषण और कुछ। उसे सन्तुलन बनाए रखना है। हम प्रकृति–पुत्र अपना यह धर्म नहीं निभाते और प्रकृति माता के साथ अतिचार नहीं रोकेंगे तो माता स्वयं बदला लेगी। वह समर्थ है। नदियों को बाँधकर बड़े–बड़े बाँधों का निर्माण, प्रकृति माता की कोख से निरन्तर अति खनिज दोहन हमारे भोग–सुख को लम्बे समय तक संतुष्ट नहीं कर पाएगा।

फ्रांसिस बेकन मानता था, प्रकृति में सब जड़ वस्तुएँ हैं और इन सब वस्तुओं का उपयोग मनुष्य के लिए करना चाहिए। देकार्ते भी प्रकृति को जड़ मानकर मशीन के कलपुर्जे के समान उसका टुकड़ों–टुकड़ों में विचार करने को कहता था। न्यूटन तक यही चला। आइंसटाइन ने भारतीय दर्शन का अध्ययन किया था। उन्होंने कहा मनुष्य अलग–अलग है और सारी पृथ्वी जड़ है, यह गलत है। वास्तव में मनुष्य भी संपूर्ण ब्रह्मांड का एक अंश है। समग्रता से विचार करो। विज्ञान का आगे का सूक्ष्म परमाणु विकास आइंसटाइन के इन विचार की देन है और मूलतः यह भारतीय अवधारणा है। हमें प्रकृति के साथ समन्वय ही नहीं अपितु आदरपूर्वक याचित सहयोग प्राप्त करने का भाव विकसित करना चाहिए।

हम मानकर चलते हैं कि प्रकृति का भण्डार असीमित है और असीमित भण्डार से हम असीमित उपभोग कर सकते हैं। किन्तु भारतीय चिन्तन हमसे कहता है कि प्रकृति का भंडार

असीमित नहीं है, उसका भंडार सीमित है। मनुष्य की वास्तविक आवश्यकताओं के लिए तो प्रकृति के पास साधन है किन्तु अगर हम अवास्तविक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसका शोषण करेंगे तो हम प्रकृति को नष्ट करेंगे। सीमित साधनों में असीमित उपयोग नहीं हो सकता। इसीलिए हमारे पुरखों ने हमसे कहा था –

''त्येन त्यक्तेन भुञ्जीथाः।

अर्थात् त्याग पूर्वक भोग करो।

तो हमें अपनी प्राचीन दृष्टि अपनाते हुए नया विकास पथ अपनाना होगा। पश्चिम प्रकृति के शोषण में विश्वास करता है। हम प्रकृति को माता मान उसके दूध पर पलने वाले हैं। हमारा उपभोग संयमित है। हमारे वर्तमान के लिए भी यही विकास पथ श्रेष्ठ है और यही शेष संसार को नष्ट होने के मार्ग से बचाने वाला मार्गदर्शक विकास पथ हो सकता है। हमारे ऊपर बहुत बड़ा दायित्व है क्योंकि हमारे पास एक जीवन दृष्टि है। हमारी इस दृष्टि और तत्वज्ञान का समर्थन आज का विज्ञान भी करने लगा है। उसके आधार पर एक नए विकास पथ की संरचना के लिए हम प्रतिबद्ध हों।

•••

शब्दार्थ

अश्वत्थ–पीपल का पेड़/अमर्यादित–मर्यादा रहित, बिना मर्यादा के/दैत्याकार– राक्षसों के आकार वाली अर्थात् विशाल, भयंकर/ मरुस्थल–रेगिस्तान/ उर्वरा शक्ति – उपजाऊपन/ समन्वय–सामन्जस्य/

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. पर्यावरण के प्रति अमेरिकी दृष्टि क्या है ?

   (क) भोगवादी (ख) संतुलित उपभोग

   (ग) पृथ्वी माता के समान है (घ) प्रकृति चेतन है ( )

2. 'जी–सेवन' में किस प्रकार के राष्ट्र हैं –

   (क) प्रगतिशील (ख) पिछड़े

   (ग) विकासशील (घ) विकसित ( )

   उत्तरमाला– (1) क (2) घ

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. भारत में पृथ्वी को क्या माना गया है ?
2. दुनिया के कितने प्रतिशत संसाधनों का उपयोग अमेरिका करता है ?
3. भूमि बंजर क्यों होती है ?
4. किस वैज्ञानिक ने प्राकृतिक पदार्थों को भी सजीव माना ?
5. केंचुए क्या काम करते हैं ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. भारतीय समाज में प्रकृति के प्रति आस्था के कुछ उदाहरण बताइए।
2. अमेरिका में भूमि बंजर क्यों होती जा रही है ?

3. प्राकृतिक संसाधनों के प्रति पश्चिमी देशों की क्या अवधारणा है ?
4. खेती में रासायनिक द्रव्यों के उपयोग से क्या हानियाँ हैं ?
5. भारत की मिट्टी में उर्वरा शक्ति बढ़ने का क्या कारण है ?

निबंधात्मक प्रश्न

1. विश्व में प्राकृतिक संसाधनों के घटने के मुख्य कारणों पर प्रकाश डालिए।
2. प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन से होने वाली हानियाँ बताइए।
3. प्रकृति के प्रति भारतीय चिंतनधारा पर एक टिप्पणी लिखिए।

•••

यह भी जानें

अन्य नियम

(क) शिरोरेखा का प्रयोग प्रचलित रहेगा।

(ख) पूर्ण विराम (फुलस्टॉप) को छोड़कर शेष विरामादि चिह्न वही ग्रहण किए गए हैं जो अंग्रेजी में प्रचलित हैं। जैसे – - (हाइफन/योजक चिह्न), – (डेश/निर्देशक चिह्न), :- (कोलन एंड डेश/विवरण चिह्न), , (कॉमा/अल्पविराम), ; (सेमीकोलन/अर्धविराम), : (कोलन/उपविराम), ? (साइन ऑफ इंटेरोगेशन/ प्रश्न चिह्न), ! (साइन ऑफ एक्सक्लमेशन /विस्मयसूचक चिह्न), ' (अपोस्ट्राफी/ऊर्ध्व अल्प विराम), " " (डबल इन्वर्टेड कॉमाज़/उद्धरण चिह्न), ' ' (सिंगल इन्वर्टेड कॉमा/शब्द चिह्न), ( ) { } [ ] (तीनों कोष्ठक), ...(लोप चिह्न), ० (संक्षेप सूचक), ^ (हंस पद)।

(ग) विसर्ग के चिह्न को ही कोलन का चिह्न मान लिया गया है। पर दोनों में यह अंतर रखा गया है कि विसर्ग वर्ण से सटाकर और कोलन शब्द से कुछ दूरी पर रहे।

(घ) पूर्ण विराम के लिए खड़ी पाई (।) का ही प्रयोग किया जाए। वाक्य के अंत में बिंदु (अंग्रेज़ी फुलस्टॉप .) का नहीं।

•••